प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ का संक्षिप्त जीवन दर्शन

सोहन राज तातेड़ का जन्म 5 जुलाई 1947 को राजस्थान प्रान्त के बाड़मेर जिले के रेगीस्थानी छोटे से गांव कानोड़ में झोपड़ों में हुआ था। उस समय इस गांव में बिजली, पानी,सड़क, स्कूल आदि कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी। गांव के कुएं का पानी खारा था, मात्र वर्षा के पानी से टांकों से पीने का पानी उपयोग में लिया जाता था। आपके पिताश्री मुलतानमलजी मध्यमवर्गीय जैन कुल से थे तथा उनके कानोड़ गांव में किराणा की छोटी सी दुकान थी। मातुश्री चम्पादवी एवं पिताश्री मुलतानमलजी के हम पांच भाई एवं चार बहिनें संतानें हैं। मातुश्री, पिताश्री प्रारंभ से ही तेरापंथी होने के कारण सोहन राज तातेड़ के जन्म के समय आचार्य तुलसी को सर्वात्मना समर्पित होने के कारण उनके संस्कार बच्चों में भी संक्रान्त हुए। मैंने कानोड़ से तीसरी कक्षा पास करके बाड़मेर जिले के हमारे पैतृक गांव जसोल में 1956 से 1960 तक पूरी स्कूल में प्रथम रहकर आठवीं कक्षा पास की।

सन् 1961 में मैंने महेश हायर सैकण्डरी स्कूल जोधुर में नवीं कक्षा में प्रवेश लेकर पूरे राजस्थान में हायर सैकण्डरी 1964 में प्रथम स्थान प्राप्त किया। नवीं से 11 वीं तक स्टूडेन्ट यूनियन का मंत्री व अध्यक्ष रहा। यहीं से मेरा सेवा का जीवन प्रारम्भ हुआ। मेरी सगाई जसोल के पास आसाढ़ा गांव में जन्मी पांचवी पास लड़की लक्ष्मीदेवी भंसाली (जैन) से हुई जब मैं मात्र सातवीं कक्षा में पढ़ता था। पांच वर्ष तक सगाई रही। 10 कि.मी. दूर गांव होने पर भी हमने एक दूसरे का चेहरा नहीं देखा। कैसा नैतिक समय था। हर कक्षा में प्रथम व राजस्थान में भी प्रथम रहने के कारण मैं कुशल इंजीनियर बनना चाहता था। लेकिन समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखने के कारण मातुश्री–पिताश्री का विनयवान पुत्र होने के कारण बिना चाहे 1965 में हमारी शादी हो गई। प्रथम रात्रि से मेरे इंजीनियर बनने में व्यवधान न आने के कारण हम दोनों ने 2 वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। इसी बीच आचार्य तुलसी के आज्ञाकारी शिष्य संत संपतमलजी ने हमें 1965 से 1967 के बीच मनोनुशासनम्, जैन सिद्धान्त दीपिका, प्रतिक्रमण, भक्तामर, जैन विद्या ग्रन्थ कण्ठस्थ करवाए तथा सजोड़े आचार्य तुलसी के पास दीक्षा लेने हेतु हमें प्रेरित किया। हम दोनों की दीक्षा होने वाली थी, परन्तु मोहनीय कर्म का क्षयोपशम न होने के कारण नहीं हो सकी। परन्तु

आचार्य तुलसी की कृपा से दोनों सुश्रावक बन गये तथा धर्म ध्यान, त्याग, पच्चखान करके धर्म मार्ग में आगे बढ़ते रहे। 1969 में बी.ई. (मेकेनिकल) पास करके मैं जलदाय विभाग में सहायक इंजीनियर पद पर लग गया।

हमारे बसंत, नरेश, भुपेश तीन लड़के हुए, जिनको हम दोनों ने उच्च शिक्षा दिलाकर तीनों की खानदानी जैन कुल में जन्मी वधुओं से शादी करवाई। मैं उस समय जलदाय विभाग, राजस्थान में अधिशाषी एवं अधीक्षण अभियन्ता पद पर कार्यरत था। तीनों लड़कों को उनकी उच्च शिक्षा के अनुसार इंजीनियर, सी.ए. एवं मेडिकल डॉक्टर नौकरी कराना चाहता था। लेकिन हम व्यापारिक परिवार से होने के कारण लड़कों ने व्यापार करना चाहा। मुझे भी 1969 में मेरे पिताजी मेकेनिकल इंजीनियर होने के कारण सभी भाइयों को धंधे लगाने के लिए फैक्ट्री लगवाना चाहते थे। लेकिन मैं बचपन से ही सेवा के संस्कारों से ओतःप्रोत था। इसी कारण सेवा से जुड़े विभाग जलदाय विभाग में अधीक्षण अभियन्ता पद तक सन् 1969 से 1997 कुल 30 वर्ष तक सेवा का कार्य करके नियमानुसार हजारों मजदूरों को नौकरी देना, लाखों कि.मी. रेगिस्तान में पाइप लाइन डालना, सैकड़ों कुओं व ट्यूबवेलों का निमार्ण, लाखों गरीब लोगों को पानी के कनेक्शन देना, बड़े–बड़े शहरों–बीकानेर, चुरु पूरे जिलें में नहर का पानी लाने का कार्य किया। राजस्थान सरकार ने इन विशिष्ट कार्यों के लिए मुझे 1970,1976,1986 व 1991 वर्षों में चार बार सम्मानित किया।

इसी दौरान आर्चाय तुलसी की कृपा से मुझे 1987 में तरोपंथ धर्म का विशिष्ठ पुरस्कार **''युवक रत्न''** प्रदान किया गया। राजकीय नौकरी में रहते हुए मैंने जैन विश्व भारती, लाडनूं में 1979 से 1987 वर्षों में पानी, बिजली, जेरनेटर, भवनों के निर्माण में इंजीनियर की मानद सेवा दी। तीनों लड़के नौकरी नहीं करना चाहते थे, इस कारण बोरानाड़ा (जोधपुर) में 1991 में जिनेश्वर सीमेन्टस् प्रा. लि. का रजिस्ट्रेशन करवाकर बड़ा सीमेन्ट प्लाण्ट प्रारम्भ करके तीनों लड़कों को पैरों पर खड़ा किया। तीनों की 1997 तक शादियों हो चुकी थी। 1993 के 1998 तक मैनें सीमेंट प्लाण्ट की मार्केटिंग करके प्लाण्ट को सुदृढ़ बनाया तथा नौकरी से 5 साल की लम्बी छुट्टी ली।

1997 में तीसरे पुत्र की शादी के उपरान्त पूरा परिवार आचार्य तुलसी के दर्शनार्थ बीकानेर गया हुआ था तब आचार्य तुलसी ने मेरा भाग्योदय किया तथा मुझे पूरे परिवार की इजाजत से **''वानप्रस्थ जीवन''** पचका दिया। इसके बाद आचार्य तुलसी जून 1997 में देवलोक हो गये तथा दसवें आचार्य महाप्रज्ञजी ने मुझे 1998 से पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाडनूं में मानद सेवा देने हेतु वहां का संयोजक बनाया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में केवल साधु दीक्षा लेने वाले भाई–बहिन भर्ती होते थे, उनको मुमुक्षु कहा जाता है। 1998 से 2008 तक मैंने 10 साल लाडनूँ (राज.) में मानद सेवा देकर 100 मुमुक्षु भाई बहिनों को बच्चों की तरह पाल–पोस कर शिक्षा देकर गुरु चरणों में समर्पित कर उनको साधु–साध्वी बनाया। इनमें साध्वियों ज्यादा थी। इस 10 वर्ष के कार्य काल में 108 समणीजी की देश–विदेश की यात्रा व उनकी शिक्षा में योगभूत बना। उनके साथ कई देशों की विदेश यात्रा भी की। इस 10 वर्ष की अवधि में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय का मानद सलाहकार एवं प्रोफेसर होने के फलस्वरुप जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों के 3000 साधु–साध्वियों की निःशुल्क उच्च शिक्षा ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन, पी एच. डी. दिलाने में योग भूत बना।

1998 से 2008 में जैन विश्व भारती लाडनूं में मानद सेवा के दौरान मैं जैन विश्व भारती संस्था का मंत्री भी रहा। 2001 में मेरी पी एच. डी. सम्पन्न हो चुकी थी। 2001 में पी एच. डी. करने के बाद मैनें शोध कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। अभी तक 60 शोधार्थी मेंरे अधीन योग, दर्शन, शिक्षा विषयों में पी एच. डी कर चुके हैं। मेरे द्वारा योग–दर्शन–शिक्षा विषयों में अभी तक 200 पी. एच. डी. स्तर के शोध–ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, जो सभी प्रकाशित होकर भारत की 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में यूजीसी द्वारा अनुमोदित होकर पढ़ाए जा रहे हैं। वे सभी 200 शोध ग्रन्थ भारत की 100 विश्वविद्यालयों की सेन्ट्रल लाइब्रेरियों में उपलब्ध हैं। अभी तक मेरी शिक्षा – B.E. (Mech.), M.E. (P.H.) M.A. (Philo.), M.Sc. (Yoga), M.Ed. (Edu.), Ph.D., D.Litt. (Philo.), D.Sc. (Yoga), D.Litt. (Social Sc.) हो चुकी है तथा शिक्षा लेना जारी है।

मेरे जीवन दर्शन पर भारत सरकार के उपक्रम जोधपुर आकाशवाणी ने 3 घंटे की फिल्म जो आठ भागों में उपलब्ध है, बनाई है जो कि यूट्यूब पर देखी जा सकती है। अभी तक स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों, 13 वर्ष तक जैन उपासक के रुप में पर्युषण आदि पर

तथा धार्मिक सस्थाओं में दिये गये 500 प्रवचन यूट्यूब पर मौजूद है। विभिन्न टी.वी. चैनलों पर उनके द्वारा दिए गये समाज कल्याण विषयों के आधा–आधा घंटा प्रति के 500 प्रवचन पुनरुत्थान कार्यक्रम के रुप में यूट्यूब पर मौजूद हैं। भारत सरकार की संस्था ने मेरे जीवन दर्शन पर एक मोबाइल एप्प बनाया है, जिसे प्ले स्टोर से इन्स्टॉल किया जा सकता है। इस एप्प में 1000 यूट्यूब के प्रवचन तथा वेबसाइट के 10,000 आर्टिकल, प्रजेंटेशंन आदि ज्ञान से सम्बन्धित देखे जा सकते हैं। इस प्रचार मेरे जीवन के बारे में पूरा जानने के लिए निम्न देखें :–

(1) www.drsohanrajtater.com वेबसाइट।

(2) Youtube पर Sohan Raj Tater, Channel 24+ News Punruthan एवं Channel 24+ News Adhyatma Vigyan, Sohan Raj Tater Knowledge speeches देखें।

(3) Facebook, Twitter, Blogger, Linked in, Herenow4U International Website, Wikipaedia, Google+ पर Sohan Raj Tater डालकर देखें।

(4) Playstore : DrSohanRaj Tater Install करें।

अभी तक मुझे 76 अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय अवार्ड से विभूषित किया जा चुका है, जिसमें से मुख्य–इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान–विज्ञान मनीषी, समाज रत्न, भारत एक्सीलेंसी अवार्ड, महर्षि पंतजलि अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड, भारत–भूटान मैत्री, राजीव गांधी अवार्ड, इन्डो–नेपाल हारमोनी, जैन पद्मश्री, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न, मदर टेरेसा सेवा रत्न एवं योग पद्मभूषण मुख्य हैं। अभी तक मैं भारत एवं विश्व की करीब 50 शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाअें में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य के रुप में मानद सेवा दे रहा हूँ। मैं. प्रो. तातेड़ यू.के., यू.एस.ए., जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुका हूँ। मैं दर्शन, योग, शिक्षा विषयों में अन्तर्राष्ट्रीय एवं भारतीय विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पी एच.डी. शोध निर्देशक हूँ। ट्रीनिटी वर्ल्ड वि.वि. (यू.के.), एन.ए. आई. (यू.एस.ए.) वि.वि. जगन्नाथ वि.वि. ढाका (बांग्लादेश), ओ.आई. यू.सी. एम. (श्रीलंका), जोधपुर राष्ट्रीय वि.वि. जोधपुर (राज), जेजेटी वि.वि. एवं सिंघानिया वि.वि. (राज.) में संरक्षक प्रोफेसर हूँ। **''पद्मश्री अवार्ड 2019''** के लिए मेरा नाम पेनल में आ चुका है, आशा की जा रही है कि शीघ्र घोषित किया जायेगा।

इस प्रकार मुझ जैसे अज्ञानी, मूढ़, साधक जो कि ज्ञान के क्षेत्र में कुछ नहीं जानता तथा आत्म–ज्ञान जानने का पिपासु हूँ, तथा सीमंधर स्वामी भगवान् को रोज प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्र मोक्ष मिले तथा मैं ज्ञाता–दृष्टा शुद्ध आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। अकर्ताभाव की साधना, प्राप्त मन– वचन–कार्य से समस्त जगत् के किसी प्राणी को मेरे द्वारा किंचित मात्र भी दुःख न हो, मेरे भाव किसी क्षण भी न बिगड़े, मन– वचन काया रूपी मेरा शरीर पूर्व भव में किए गये कर्मों के भुगतान के लिए मिला है। मेरे आनेवाले विचार दृष्य हैं जिसे byepass करो, क्योंकि मैं तो ज्ञाता–दृष्टा शुद्ध आत्मा हूँ। विचार जड़ है, जड़ के साथ तन्मयाकार नहीं होना है। मेरे मन–वचन–काया की जीवन पर्यन्त हर प्रवृत्ति का संचालन संजोगों के माध्यम से कुदरत करती है, जो कि कषाय का डिस्चार्ज है, यह मेरा पूर्वकृत हिसाब चुकता हो रहा है। नये भावकर्म (कर्म बीज) न डालूँ ताकि 2–3 भव में मैं मोक्षगामी बनूं। यही अभिलाषा है, शेष सारा पद–प्रतिष्ठा, कामना, इच्छा मात्र डिक्चार्ज **हैं** मैं उससे अलग ज्ञाता–दृष्टा शुद्ध आत्मा भगवान् हूँ। चौरासी लाख जीवा–योनि में सभी का शुद्ध आत्मा भगवान एक जैसा ही है, कोई फर्क नहीं है। हर प्राणी कर्मों के अधीन उसके भुगतान हेतु शरीर प्राप्त करता हुआ चौरासी लाख जीवायोनियों में भटकता है। आत्म–ज्ञान प्राप्त होने से ही मुक्ति है। जड़ पदार्थों का आर्कषण समाप्त कर चेतन तत्त्व की अनुभूति (अनुभव) से ही मुक्ति है।

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय

राजस्थान

मो. 9829650702

Email : Sohan.tater@gmail.com

www: drsohanrajtater.com

Youtube : Sohan Raj Tater

Play store : DrSohanRajTater